जयशंकर प्रसाद

नाम	:	जयशंकर प्रसाद ।
जन्म	:	1889 (माघ शुक्ल दशमी, संवत् 1946) ।
निधन	:	15 नवंबर 1937 में ।
जन्म-स्थान	:	वाराणसी ।
पिता	:	देवी प्रसाद साहु ।
पितामह	:	शिवरत्न साहु [सुरती (तंबाकू) बनाने के कारण 'सुंघनी साहु' के नाम से विख्यात] ।
शिक्षा	:	आठवीं तक । संस्कृत, हिंदी, फारसी, उर्दू की शिक्षा घर पर नियुक्त शिक्षकों द्वारा ।
विशेष परिस्थिति	:	बारह वर्ष की अवस्था में पितृविहीन, दो वर्ष बाद माता की भी मृत्यु । परिवार में गृहकलह की स्थिति। ज्येष्ठ भ्राता शंभु रतन की मृत्यु से संकट की स्थिति उत्पन्न, सभी उत्तरदायित्व प्रसाद जी के कंधों पर ।
रचनाएँ	:	कलाधर उपनाम से ब्रजभाषा में सवैयों की रचना, प्रसाद की प्रेरणा से उनके भांजे अंबिका प्रसाद ने इंदु का प्रकाशन 1909 से प्रारंभ किया, कालक्रम के अनुसार चित्राधार प्रथम संग्रह, जिसमें कविता, कहानी, नाटक आदि रचनाएँ संकलित । काव्य संकलन : झरना (1918), आँसू (1925), लहर (1933), अतुकांत रचनाएँ : महाराणा का महत्त्व, करुणालय, प्रेम पथिक । प्रबंध काव्य : कामायनी (1936) नाटक : कल्याणी परिणय (1912), प्रायश्चित (1914), राज्यश्री (1915), विशाख (1929), कामना (1927) जन्मेजय का नागयज्ञ (1926), स्कंदगुप्त (1926), एक घूँट (1928), चंद्रगुप्त (1931), ध्रुवस्वामिनी (1933) । कथा संग्रह : छाया (1912), प्रतिध्वनि (1931), इंद्रजाल (1936) । उपन्यास : कंकाल (1929), तितली (1934), इरावती (अपूर्ण, 1940) ।

आधुनिक हिंदी की स्वच्छंद काव्यधारा के अंतर्गत छायावादी काव्य प्रवाह के प्रवर्तकों में जयशंकर प्रसाद वरिष्ठ थे । 'छायावाद' हिंदी की आधुनिक कविता में स्वच्छंदतावाद के ही एक विशिष्ट रूप को कहते हैं । इस विशिष्ट भावधारा में व्यक्तिचेतना, स्वानुभूति, प्रकृति-साहचर्य, उन्मुक्त प्रेम, कल्पनाशीलता, स्वातंत्र्यभावना आदि नवीन भावों की उत्कट चेतना थी और अभिव्यक्ति पद्धति में लाक्षणिकता, चित्रात्मकता, अमूर्तन, रहस्यात्मकता, दार्शनिकता, सांगीतिकता आदि का आग्रह था । छायावादी काव्यभाषा भी अभिव्यक्ति के अनुरूप तत्सम प्रधान, संस्कृतनिष्ठ और नवीन थी । काव्यभाषा और अभिव्यक्ति पद्धति में परंपरा के जर्जर, विगलित रूपों तथा रूढ़ियों का निषेध तथा एक ऐसी सर्जनात्मक मौलिकता थी जिसमें बहुविध नवाचार झलकते थे । वास्तव में छायावाद की काव्यभाषा और अभिव्यक्ति पद्धति में परंपरा का पूर्ण निषेध न होकर जैसे उसका पुनर्जन्म था, उसमें परंपरा की नवीन स्मृति थी । जयशंकर प्रसाद का साहित्य इन तथ्यों का प्रामाणिक साक्ष्य प्रस्तुत करता है ।

जयशंकर प्रसाद न केवल एक महान छायावादी कवि थे बल्कि वे एक महान नाटककार, उपन्यासकार, कहानीकार एवं निबंधकार भी थे । इन विधाओं और साहित्यरूपों में उनका युगांतरकारी अवदान है । कवि के रूप में उन्होंने आरंभ में ब्रजभाषा में कविताएँ लिखीं किंतु शीघ्र ही उन्होंने काव्य रचना के लिए युगानुरूप नई साहित्यिक भाषा–खड़ी बोली हिंदी अपना ली । कविता के क्षेत्र में उन्होंने गीत, प्रगीत, लंबी प्रबंधात्मक कविताएँ आदि शैली रूपों की रचनाएँ प्रस्तुत कीं । किंतु उनका सर्वश्रेष्ठ अवदान है-'कामायनी'। 'कामायनी' समग्ररूप में 'छायावाद' की प्रतिनिधि और उत्कृष्ट काव्य कृति तो है ही; वह आधुनिक हिंदी का श्रेष्ठतम महाकाव्य भी है । इसमें प्रलय के बाद मानवीय सृष्टि के विकास की पौराणिक कथा का आश्रय लेकर मनुष्य के मानसिक-आध्यात्मिक विकास के संक्षिप्त इतिवृत्त को बड़े अर्थपूर्ण संकेतों द्वारा प्रस्तुत किया गया है । कश्मीरी शैव दर्शन की पृष्ठभूमि में इस महाकाव्य में कवि का जीवन दृष्टिकोण भी बड़े प्रभावशाली रूप में व्यक्त हो सका है । स्वभावतः 'कामायनी' में आधुनिक मानव सभ्यता की मार्मिक समीक्षा भी हो गई है ।

'कामायनी' से लिए गए प्रस्तुत अंश में महाकाव्य की नायिका श्रद्धा, जो वस्तुतः स्वयं कामायनी है, आत्मगान प्रस्तुत करती है । इस गान में श्रद्धा (जो वस्तुतः विश्वासपूर्ण आस्तिक बुद्धि है जिसके द्वारा विकासगामी ज्ञान एवं आत्मबोध प्राप्त हो पाता है) विनम्र स्वाभिमान से भरे स्वर में अपना परिचय देती है; अपने सत्ता-सार का व्याख्यान करती है । प्रकारांतर से यह नारीमात्र का परिचय और महिमागान हो जाता है ।

◆ ◆ ◆

> **"प्रसाद जी के पास ऐतिहासिक बुद्धि थी । वे मानव-भाग्य के संबंध में दार्शनिक दृष्टिकोण से तो चिंतन करते ही थे, समाज और जाति के भाग्य के संबंध में भी उन्हें सोचना पड़ा । मानव सभ्यता संबंधी प्रश्नों पर उनका चिंतन बराबर चलता था । उनको समाज और जाति ने अर्थात आधुनिक जीवन-जगत ने जो दृष्टि प्रदान की–वह थी राष्ट्रवादी सांस्कृतिक अभ्युत्थान से प्रेरित । उन्होंने अतीत के गौरवमय चित्र उपस्थित कर इस राष्ट्रीय सांस्कृतिक अभ्युत्थान में योग दिया ।"**

– मुक्तिबोध

तुमुल कोलाहल कलह में

तुमुल कोलाहल कलह में
मैं हृदय की बात रे मन !

विकल होकर नित्य चंचल,
खोजती जब नींद के पल;
चेतना थक सी रही तब,
मैं मलय की वात रे मन !

चिर-विषाद विलीन मन की
इस व्यथा के तिमिर वन की;
मैं उषा सी ज्योति रेखा,
कुसुम विकसित प्रात रे मन !

जहाँ मरु ज्वाला धधकती,
चातकी कन को तरसती;
उन्हीं जीवन घाटियों की,
मैं सरस बरसात रे मन!

पवन की प्राचीर में रुक,
जला जीवन जा रहा झुक;
इस झुलसते विश्व-वन की,
मैं कुसुम ऋतु रात रे मन !

चिर निराशा नीरधर से,
प्रतिच्छायित अश्रु सर में;
मधुप मुखर मरंद मुकुलित,
मैं सजल जलजात रे मन !

अभ्यास

कविता के साथ

1. 'हृदय की बात' का क्या कार्य है ?
2. कविता में उषा की किस भूमिका का उल्लेख है ?
3. चातकी किसके लिए तरसती है ?
4. बरसात को 'सरस' कहने का क्या अभिप्राय है ?
5. काव्य-सौंदर्य स्पष्ट करें –

   पवन की प्राचीर में रुक,
   जला जीवन जा रहा झुक,
   इस झुलसते विश्व-वन की,
   मैं कुसुम ऋतु रात रे मन !

6. 'सजल जलजात' का क्या अर्थ है ?
7. कविता का केंद्रीय भाव क्या है ? संक्षेप में लिखिए ।
8. कविता में 'विषाद' और 'व्यथा' का उल्लेख है, यह किस कारण से है, अपनी कल्पना से उत्तर दीजिए ।
9. यह श्रद्धा का गीत है जो नारीमात्र का गीत कहा जा सकता है । सामान्य जीवन में नारियों की जो भूमिका है, उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि कविता में कही गई बातें उसपर घटित होती हैं ? विचार कीजिए और गृहस्थ जीवन में नारी के अवदान पर एक छोटा निबंध लिखिए ।
10. इस कविता में स्त्री को प्रेम और सौंदर्य का स्रोत बताया गया है । आप अपने पारिवारिक जीवन के अनुभवों के आधार पर इस कथन की परीक्षा कीजिए ।

कविता के आस-पास

1. इस कविता से भाव-साम्य रखनेवाली अन्य कविताएँ उपलब्ध कीजिए ।
2. जयशंकर प्रसाद की कहानियों को पुस्तकालय से उपलब्ध कर पढ़ें ।
3. प्रसाद जी की प्रतिभा अप्रतिम थी । कविता के अतिरिक्त कहानी, नाटक और उपन्यास विधा को भी उन्होंने समृद्ध किया । हिंदी साहित्य को जयशंकर प्रसाद के अवदान पर शिक्षक से जानकारी प्राप्त करें ।
4. दिगंत (भाग-1) में नरेश सक्सेना की कविता 'पृथ्वी' दी गई है । उस कविता में भी पृथ्वी के बहाने स्त्री का महिमागान है । उस कविता से इस कविता की तुलना कीजिए ।
5. इस पाठ्य अंश को आशा भोंसले गा चुकी हैं । कैसेट उपलब्ध कर सुनें और अपनी प्रतिक्रिया लिखें ।

भाषा की बात

1. पठित कविता के संदर्भ में प्रसाद की काव्यभाषा पर टिप्पणी लिखें ।
2. कविता से रूपक अलंकार के उदाहरण चुनें ।
3. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाएँ –

   कुसुम, हृदय, व्यथा, बरसात, विश्व, दिन, रेखा

शब्द निधि

तुमुल कोलाहल	:	अत्यधिक हो-हल्ला	मधुप	:	भौंरा
विकल	:	अशांत (कल-शांति से रहित)	मरंद	:	मकरंद, मधु, सुगंध, पराग
मलय की वात	:	मलयाचल से चलनेवाली हवा	प्रतिच्छायित	:	आच्छादित, छाया हुआ
तिमिर	:	अंधकार	मुकुलित	:	कलियों से गदराया हुआ
प्राचीर	:	ऊँची चहारदीवारी	जलजात	:	कमल, जलज
नीरधर	:	बादल			